

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 यत्किञ्चिदपि कुरुते
 कुरुते विद्या रुतं वा गा
 उद्युगा नानुते ॥

॥ इति द्वापयं च नवाध्यायं कुरुते वसुधा दत्त
 कुरुते ननु इति कुरुते ननु इति कुरुते ननु ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 32

वच्चा सलोक सफु

१३ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ मधुलपदकिं धाम ॥ आकाशं व्याद। वक्रत्वा
 दनादिनिधनः ययः महावज्रसमयसत्त्वाश्रयवजायसिद्धिम् । सर्वलुप्तमहासिद्धि
 माहं ध्यादिदेवगः सर्ववज्रधरायाजासिद्धिम् ययमो कुरुः निदधिमभ्यगम्
 पितृवर्गगन्तुगद्यः । तत्त्वेन सिद्धिम् गवः महावाग्यमहावज्रः । अत्यरुगुधधमाय
 आदिमुक्तुत्तमगगः । सकलदसर्वात्मवाधिसत्त्वपुसिद्धिम् । सर्वलुप्तमहासिद्धिमा
 हं ध्यायिमुदयासिद्धिवज्रमहाकृपादिजगत्पितृमम । सर्वसत्त्वमनायापी सर्वसत्त्व
 इति ह्मिः । सर्वसत्त्वपिगाववकासायः समयायि ध्यायनसत्त्वेन सर्वानपुक्षपायात्मम

धुलं गनसत्त्वेन मनाथ कामात्त्वं परिपूरय ॥ १ ॥ कर्तनसत्त्वेन ॥ यिथियासम्पति
 थपदकिं धजानुमधुलंदसिर्गणमहानाथं सर्वरुसर्वदसकः विनाधियमहावि
 लं विनाधियत्वं विलं नमामिहं ॥ निनाकात्रे निवागवः कर्मनाथं समविगं । पूर्वदि
 दिसिस्तुक्तानं पञ्चविनमस्तुगं ॥ चतुष्टयं दक्षिणम् ॥ सहस्रजनं ॥ पञ्चसावहि
 वकः ॥ धर्मागत्रि ॥ ॥ तणाविकालवलायापिहाय ॥ गच्छपन ॥ वलिविय ॥
 नन्दिपदप ॥ नमस्काव ॥ पागदवक्राय ॥ धुन्यायाग ॥ वागमावा ॥ पागमरुमज ॥
 गीतविश्वसुह ॥ श्रमक ॥ किंकि कल्पे विगुहाय रुद्र वयसाय वदुग्रहृत्त्यागः

[illegible]

य

लज्जयुह रुक्मां गुरीति मृदावधपुष्टि क मवलित मश्वरुच च रुक्मावध ॥
 कर्म ॥ नखाशीवजवावादि मकु मलि जि न म्वरी अरुणावयदाहिमा पद्विति
 द्विवयव दा यव काल समासि वं स रुजान द नू पी नि पुह्ना हान द हा ग्र न मरु
 ३२ शीवजया गीनि ॥ ॥ सर्व नृ त्य ॥ गीत पि उवन दालिग ॥ मूल भूक ॥ नखास
 वं त थ ग ना गुध ग ध धा य वार्थ गु वा ४ श्रीवकासन नाम रू पि न न ना ४ स सा न
 दाष यद ४ अष्ट वं व वृ ह ना द म म म स सा ध न त ल गी ना ना व धू न थ ग ना दि
 व व ना द हं न थ क थ न ॥ कर्म स्य ॥ क क वा कं म हा धी व र ह य स्या पि रु यं क रं

॥ समय सत्व व द्याया हान सत्व म हा हू लं ॥ ॥ कर्म न गुरु म धु ल म धु ल स
 पूजा ॥ ॥ मूल नृ त्य ॥ गीत नू मा मि २ व द स व व ॥ भूक ॥ रु जा गी ना ग वा रु
 ४ क मू द भ सि नि रु ४ प च्च वृ द्वा क मी ली वा धू गी ध्वा न द्रा नि नू प म ह व द ४ स य
 दा पू क वा ध ४ वे दा स्य ध न पी न पु ल य व वि रु त्रि वा म वा धू नि वा य ४ पा या धी
 व ज धा गु ति उवन दि त रु क का नि मा मा ज रु य ॥ ॥ कर्म नृ त्य ॥ का य म
 ३३ स भान पूजा ॥ गीत ॥ अका न स जा ग ॥ भूक ॥ अ य धं प नि ला नि द र्य ध ग रं
 वि धं स दा या द हं गा द ध म धु ल व क म द य ग या य क पि का टि स्वर्य ॥ त स

३६

पिधरुयया दामडागवृद्ध दयंकः सरुजानन्दवन्दामहः॥ ॥ गीत ॥ न
महं ॥ मूल ॥ नृत्त्यादाविद्यामात्रावनिगवसुधुवकनिष्कमुदहः सरुगा
वीधिरुदंदिगुधजलधुवयाफदिक्कानुदहः ॥ उडामावाहदहं प्रकृतिप
विरुक्ताकनकगुणान्नमार्तनित्यावगात्रं हनतु रगवगलाधुवहं नृकस्य ॥
कर्म ॥ धृत्तः कंदर्पदध्याह विमपिदलिनामर्दिनः ॥ लयाधि रल्लव
म्राधुखधु किमिदहनममूलायुधगात्रिनः ॥ स्वरूपो गालममूयह
गधसकलान्यालदि आलनागम सुलाकाकानमूर्तिरुयनिविज्ञयेन

गृ

३७

वधुनाषाचलं ग्रीष्मया ऊर्गुलानरावप्रवलप्रिपूगधंयामवीवीनलश्रीः यद्य
धृत्तिगिधिलेधुधवधनृषावगपागन्दधनैः ॥ वधुपी उध्वनत्वं प्रमदगि
प्रियूगामर्दयन्यादनीलः पायाल्लला कवीवाविज्ञयगुधकनासिद्धिपूर्णा
वर्कः ॥ ॥ गीत ॥ सपनिमधुग ॥ मूलस्य ॥ कृष्णगवसिदनेतु गिरुव
नेनप्राधिनामीरुना श्वक (भा) सिनमानुषानविषयानाकाननिकादया
नृपाद्यानचधर्मगात्मकथयासुमाधुलयाः ॥ विध्वंसधुलवकुमाकलय
वगः किमूजाम्यसि ॥ कर्म ॥ विध्वंयधतिनिस्वराव सखिलहानयदाथा

गिनः सर्वो लंबं सति यत्पुनर्गदवात्मानलम्बनम् । आरासुगुयसंयगात्मनि नि
 मालंबं न दगच्च हि रुदा रुदविवर्द्धिगानि न बधे वाधि ऊणत्वं कृणु ॥
 ॥ पक्षानपत्यदा वृत्त्यसधुलागमनसध्वनम् ॥ नरुणं कर्मवर्जं गुपूर्वादिदि
 क्समधुलम् ॥ गीतमून्यनिर्गुनम् ॥ पूर्वचार्यस्य ॥ ॥ लंबं वरुसुखं वनं ध्व
 नसुखं शुक्लाया हिमावति मनाहूमाहूथकामे ॥ कामाहिमाजनकसुख
 महायवधूर्यदि कुरु सजीवगुमर्कनाथ ॥ १ ॥ दक्षि ॥ गीत ॥ शुभक ॥ लंबं वरु
 कायवरुसुखप्रियायवका वृद्धाथवाधिपत्रमार्थहिगान्दनी ॥ नालगदनाग ॥

समयासमकामयस्व यदि कुसुमीव गुमश्च नाथ ॥ २ ॥ गीग ॥ पच्छिं ॥ ख्वं
 ऊवाच सकलस्य हि गान्धर्वी लोकार्थकार्यकक्षसंगगं प्रवृत्तः ॥ कामा
 हि मासृज गचर्यो ततः कुरुष्व यदि कुसुमीव गुमश्च नाथ ॥ ३ ॥ गीग ॥ उरु
 व ॥ ख्वं ऊवाच कामसमयाय महाहि गार्थः सर्वं वंशतिलकः समगान्धर्वी ॥
 कामा हि मायुधनिष्कवद्रत्नरत्नं यदि कुसुमीव गुमश्च नाथ ॥ ४ ॥ गी
 ग ॥ गीग ॥ मूलकर्मभक्त ॥ सर्वार्थसाधनकरी ॥ सर्वकामपुलकध्वगुरु
 वनेध्वस्तपुसन्न ॥ मानालिमानसुवर्गपविरुद्धमानः ॥ सन्ध्याधिसाधनपनां प्र

यगकनीति॥ ॥ मलाचार्यामधुल गृहं गत्व निकर्म्म नवदग् ॥ रुद्रमुक्तं
 ॥ क्षीनरुथन ॥ गीत गिरुं ॥ मूलस्य ॥ यस्मात्सर्वेषां दि॥ ॥ कर्म्मस्य ॥ गुण
 नवदिगां श्रुं विवनिगां ग्रीवज्जमालिङ्गना नगां भवहिगा नवदिपूवधान् ग्री
 मधुलं यानि नि ॥ गुणमवहिगा सर्वहि महति ग्रीव जिह्वि स्वागन् सर्वे केषु क
 तिषु राख्यमिदं सिद्धं जगन्नाटकं ॥ ॥ गीत ॥ राख्य ॥ मूलकर्म ॥ ग
 ना ॥ न्योन्यं राख्य ॥ कर्म्म ॥ एगवन्किं न समयं ॥ मूलः ॥ ऊंकारं ॥ ॥ क ॥ क्ष
 नृक्षसि मरुमून ॥ मू ॥ नाहं कयुधमधुलः शीमान् ॥ क ॥ कगाभीयं वलं न किं

॥ पुनरुपपत्त्यच्छति ॥ क ॥ एगवन्किं न समयं ॥ मू ॥ ऊंकारं ॥ क ॥ वसुत्वं
 मृनिपूंगव ॥ ॥ मू ॥ नाहं वैशोवनः शीमान् ॥ ॥ कर्म्म ॥ इगाग्रित्वं वैशो
 वन ॥ एगवन्किं न समयं ॥ ॥ मू ॥ आःकारं ॥ क ॥ गमने उल्लासि किं वि
 रा ॥ ॥ मू ॥ नाहं नृत्त्यं वैशः शीमान् ॥ क ॥ नगत्वं मृपदासकः ॥ एगवन्
 किं न समयं ॥ ॥ मू ॥ णांकारं ॥ क ॥ कुपत्वं मानयापहः ॥ ॥ मू ॥ ना
 हं ग्रीवज्जसूर्याख्यः ॥ क ॥ वकाकारं कथन्नग ॥ एगवन्किं न समयं ॥
 ॥ मू ॥ खंकारं ॥ क ॥ नरत्वं मून्यवधिगं ॥ ॥ मू ॥ नाहं वज्रकुनगः ॥

क॥ श्रीरक्तवर्णपुत्रावुज॥ रुगवर्किं न समयं॥ ॥ म॥ भक्तवर्ण॥ क॥ श्रीमा
 याविरुक्तिं॥ ॥ मूल॥ नाहं लावनादवी॥ क॥ लावनावसवकला॥ रु
 गवर्किं न समयं॥ ॥ म॥ कृपासुखं॥ क॥ अहो लोभिकसुन्दरी॥
 ॥ मूल॥ नाहं मामकी अचल॥ क॥ पुरंधिमासकस्यकिं॥ ॥ रुगवर्किं न
 समयं॥ म॥ महाभाग॥ क॥ वं गृह्यावाचमसि किं॥ ॥ म॥ नाहं पादुका
 दवी॥ क॥ नक्षत्रं गुणकथं॥ ॥ रुगवर्किं न समयं॥ मूल॥ महा
 वं॥ क॥ याषिनाद्रिकासि किं॥ म॥ नाहं कंकवहावा॥ क॥ ह

ननु गतिगविधी॥ ॥ कर्म साक॥ धन्या इहं कंकनः श्रीमान् धृष्ट
 वरिणाधुना॥ धृष्टगात्रनववर्णं गुल्यजल्यहं साकलं॥ वंसत्वां महाधि
 ष्ठा मृष्टावनाचनामनिः॥ कामासक धलाकंगः ये गृह्यावज्जहात्कनधा
 सर्वदाषाकनामाद्या दाषिष्ठयश्च नायकाः॥ सत्वा मृष्टजावा जवायुजा
 वा सत्सिद्धजागकासुथा॥ नृपिष्ठावा अरुपिष्ठावा शापपाइकाधयं॥ सत्वा
 वृद्धाक विष्णामी॥ एवमकलयापवा॥ रुगासिखं पर्ववृद्धं कथं नकुणा
 दिना॥ अगवमृष्टावादी एवमनकथं दिना॥ सत्वा नृपगायवृद्धं य

चिदीयनगडुनं॥ ॥मूल॥ ॥४८॥ धूककव॥ मायापदवदुर्लिकं प
नवकुपपीठन॥ यतिव्यामधुलहामं अनावृष्टवमनिक॥ यामान्नर्ण
यगनियं मल्लरावनयाचिग॥ गम्याहमगुन॥ ४८॥ गगमिथ्यारवाति
ना॥ ॥४९॥ गगवाचुद्धा॥ जाकिनीवरुप॥ ४९॥ ॥कर्म॥ ॥रवनकासा
मकुमडादिरावना॥ ॥मूल॥ ॥४९॥ नृकन॥ गामयदर्शयामि॥ ॥
॥४९॥ निध्यानृत्य॥ ॥तदनृपयाचार्य॥ धिस्तमाधिमात्र॥ ग॥ मध्यम
नृ॥ अनीलनकवधू॥ नमस्तु॥ विचक॥ ॥गीत॥ चविनी॥ पूर्वचार्य॥ नृ

य॥ ॥४९॥ ॥सर्वगुणगगाभक्तं सर्वगाथगगालयं॥ सर्वधर्मागुनेवात्म्यं दु
हामधुलमूलम॥ ॥दकी॥ ॥अमिय॥ ॥४९॥ ॥सर्वलक्ष्मस्तुपू॥ सर्वल
क्ष्मवर्द्धनं॥ समकुरुदकायागु॥ रावमधुलमूलम॥ ॥यति॥ ॥नृकड॥ ॥
॥४९॥ ॥नृधर्मायस्तु॥ नृनवय्याविष्मधक॥ समकुरुदकायागु॥ रावम
धुलमूलम॥ ॥४९॥ ॥३०॥ एवा॥ ॥४९॥ ॥सर्वसत्त्वमहाचिह्नं॥ गुरु
पुद्गतिनिर्मलं॥ समकुरुदकायागु॥ रावमधुलमूलम॥ ॥पुनमूल
नृत्य॥ ॥३०॥ एवा॥ ॥४९॥ ॥मूडामकुपयूकन॥ प्रगिष्ठाकन॥ गडुना॥ सर्व

सखिगार्थनसर्वविश्रापमकथन॥ ॥ ॥ गीत ॥ नमस्ते नमः ॥ ॥
 ॥ वन्द्यो वज्रसख्युवनवनगुर्वसर्ववृक्षा रुवृक्षं नानावृषधयनृषिमल
 लयहवनिर्मितं भद्रसुखं । धर्माध्यायमनीनां दिनगुधनिलयमधुलव
 ऊर्ध्वगोऽसर्वानन्दकनूपं सहस्रसखसयं देहिनां भाकुरुगाः ॥ ॥ गगाम
 कुलवक्रसुखधदिकं राविनमधुलं वज्रसखिद्वयस्य गङ्गा नीधयं प्रसाथ
 लभ्यगमस्य मुखं मूर्द्धिध्वयन ॥ ३ ॥ वज्रालिङ्ग ॥ ॥ ॥ नृपति ससुखा
 यालिङ्ग ॥ ॥ गगामूर्द्धिपूष्यां कलिना ॥ ३ ॥ पदमासि सर्वगं गगामि

तिष्ठमह ॥ ॥ गगाद्वयसंप्रदां कलिमादाय ॥ सर्वगं गगमय आत्मा
 नं निर्यागया मिति निर्याय ॥ यावत्तः सर्वसखाः सखसंगद्वयसंयुदिगा
 अक्षुजावाजवायुजावा सुखदजावा उपपादकावा नृपि (सखा) अनृपि (धवा) स
 गिनावा नैवसंगिनावा नामसंगिनावा सर्वसखा मयामहामृदा मकुष
 दपुतिद्याययितव्याः कृतिकृतपुतिधिः ॥ ॥ अविद्याधकायपविगगानसखा
 मात्रेन विधिगानतिवीर्यमाधनसावयि र्गुं सटितिमधुलं समूर्द्धिः ॥ का
 धवगङ्गा कटीदंष्ट्रा कटसाठायवगादिमानः ॥ ॥ टकायवदीकृत

* अर्हं गिनावा ४

धर्मरत्न वज्रानाथं सुरत श्री महाविद्यालय

DM 32

नमो श्री गुरुभ्यो नमः श्री वज्रसूक्त

वज्रसूक्त

वासनं ४८ सखाकृविन्यस्यसकायमूर्य ४१ पादातनिसूविगत्रमिजालर्द्धम्
 जगडादिकमात्रकृद ४॥ ॥ उक्ता धृष्टिहीविनिद्रंकारं धकल्याकवद्री
 कृगोरयगावानयावजहृष्टा सखासुदिङ्गजगदीकृगाहंकारंवाल्यादय
 न् ॥ मूल ॥ अहंभवस्वर्यवरी वज्रसखास्यहंस्वर्य ॥ अहं वक्षामहाना
 जा अहवरीमहावल ४॥ अहंयागी ग्वेनोगाजा वज्रपाहिवहृष्टमिति ॥
 ॥ याविधुससमसवधनेगनि ४ सम्यकसिल्वीरियं सर्वं यविभलनिम
 लग्नरुलानपर्वधदय ४॥ सखास्थेद्वगमानसधसविनोगीमसैवजाविः

उल्लनखाकियनपरिक्रमनयाविद्यापभनकमया ॥ ॥ गग ४॥ सविज
 सविलासाय वज्रालूननगल्पन ४॥ नेमनीदिभमात्रय साहंकारंयविजम
 न् ॥ ॥ दिगभवायनृत्य ॥ गीत ॥ जिनजिक ॥ पर्व ॥ एकगुविपद ४॥ म
 न् ॥ ॥ क ॥ अपसर्गं कुरुवनायकविद्धत्यादि ४॥ ॥ गीत ॥ नूपगद्य
 ॥ दकिं ॥ मकु ॥ गिगुविक ॥ अपसर्गकु ॥ ॥ गीत ॥ कसकला ॥ मकु ॥ प
 वि ॥ पर्वगुविक ॥ अपसर्गकु ॥ ॥ गीत ॥ विद्यान ॥ उरुय ॥ मकु ॥ वि
 धवजपद ॥ अपसर्गकु ॥ ॥ मूल ॥ क ॥ ४० ॥ ॥ हंस्वरजर्जलाकं विदम

नृपगुणैर्गर्वैवकवर्क्यापागलनागवाजाहृदिकुलनमिगः सर्वलोकारुमा
हं। कानैवैवोमृनिद्राः। कृत्रयनमविगुथागिनाविजयागम। वैद्यकात्रः प
विशोवजममभनधसर्वयवनवाजन॥ ॥ ॐ गिप्रधानावायस्यविष्वा
सावध॥ ॥ अथकर्मप्रवेगः॥ चक्षुकलिनेसमूर्ख॥ गीग॥ जिनव
जननी॥ मूल॥ अक॥ श्रीमसिद्धिमहाययायविमर्जप्रह्लादनालिगिन
यामयापिमृनीदुनिर्मितयनेमेलोचवैष्णवगं। मायाजालविलास
निरुगसर्वकीजनसंगविगं नत्वामरैवकयामिजगतात्मधुरा

लाधन॥ ॥ कर्म॥ आलीरासनगुक्रमकवदनंवजाकीचक्षुगनिंशिष्टा
लिंगधयोर्गुगवैगीयुयं गिराकात्मकं। नादावस्तिगमध्वयस्यरवता
सागप्रवधमकं। लाकस्यालिमगत्रमामिनियतं। गेलोचनाथगवः॥ ॥
अथकर्मप्रवेगदृश्यपुधानः पदसाधनैकयाग॥ ॥ ॐ अक॥ गी
ग॥ निजकुव॥ मूल॥ नृप॥ अ॥ गवागवविदेकताविजहितायग
स्यराजगं। मानदानन्दमयः प्रवाधमहिमाया। माकनव्यापकः नाना
कालविभननिर्मलगया। दर्शनसुनमधुलं। प्रायसर्वमूर्खालयसह

॥ ३ ॥ ॥ उरुवाय्य ॥ गीत ॥ सहस्रसदृशि ॥ श्लोक ॥ उदिव्याधिपतिमाकुरु
 ॥ मालापरिपुंगुल ॥ विद्याय समना ॥ अहं पादमुद्रापका गुरुक ॥ ४ ॥
 विश्ववज्र ॥ पद ॥ ८ ॥ ॥ श्लोक ॥ श्यामनालकवर्धनो धरुपं तथा वल्लिधिं वनो दाहियुक्तं
 ॥ किंकनयारि नयपुष्पममगच्छ कुर्यादि निवाक नृप ॥ ४ ॥ ॥ आबुक्ताद्यु नसागला गगपत्रि
 पाका न विष्मगनि धाता च जविगान पशुं न घना पाके पूर्वी न ध्वनः पायान्मकु गल हिरि ४ व
 गमृखाया देवतास्तु नयनिघ्न विघ्नघनं न गविन वनादाय (शर्वव पृ ४) ॥ ४ ॥ गगामधुलाग ॥
 ॥ कर्मपत्यदा वृत्त्युपधानपवर्ग ॥ मूलनृत्य ॥ गीत ॥ कलिगवुजानल ॥
 ॥ ॥ श्लोक ॥ स्वप्राहस्तु न धामकं रगदिदं ह्यात्मा समाजामकं ग्रीमामधुल

चक्रनिर्मितगगने विभक्तगाहककुरुधन ॥ कृत्वा वज्रसत्राजधनधुपूठया
 नृमिर्द्वयास्तुलना दत्यद्या नमहासखात्मसत्रासिमासहै वज्रा रुव ॥ ॥
 गगपधना चाथानवो कुरुपं कुर्यात् ॥ गीत ॥ रुवीरुसमुवधवल ॥ ॥
 मध्य ॥ वधवल ॥ पर्व ॥ ख ॥ ग ॥ व ॥ क ॥ न ॥ मा ॥ स ॥ ह ॥ ॥ ॥ गद नृ
 एयापिमध्यस्त्रिषो आस नानि कुर्यात् ॥ ॥ मूल ॥ ॥ श्लोक ॥ पंचाचार्य
 चंद्रुदवी दुषिको हि वलात्मक ॥ स्ताने वमधुलागमन नृत्य गवु वधनाद
 क ॥ ॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ पश्य केतुखपूर्वा नरुवनिहिनियनं वज्रपथ्य के
 नाम पथ्य की न्ये च पूर्वान्कद नृवकथि नवापय पम पूर्व ॥ प ॥ अ ॥ रु ॥ डा ॥ स

नंदे गुरुहलदमगं स्वलिपूर्वासनंदे आचार्याहमिगुं दानववसपति
 कश्चासनन्यागकात्री ॥ ॥ प्रवाचार्यनृत्य ॥ गीत ॥ मृगदधमा ॥
 ॥ श्रमक ॥ सर्वव्यापिरुवायग्य सुगगाधिपगंजिन प्रक्षु कं महा राज व
 यावधनमसदा ॥ १ ॥ की ध्वगमृदानहं कं दुय ॥ ॥ मूल ॥ गीत ॥
 वक्ष्ये दिव्या ॥ श्रमक ॥ नमस्तु वज्रसखाय वज्रराजाय नमस्तु नमस्तु व
 ज्रराजाय साधु वज्राय नमस्तु ॥ २ ॥ रूपगुं मृदामकुनहं दुय ॥
 दजीय ॥ गीत ॥ अस्वदसुथी ॥ श्रम ॥ वज्ररत्नमूर्वीरं गजवजाय नमस्तु
 हो

म १
 सर्वकं गुह्यं कायं हासवजाय नमस्तु ॥ ३ ॥ ववदमृदामकुनधाने ॥
 ॥ पश्चिं ॥ गीत ॥ मयवमृदा ॥ श्रम ॥ धम्मराजामिगारोय वज्रगी प्रमः
 हाकाया कं गुवज्रमहाहं गु हासवजाय नमस्तु ॥ ४ ॥ श्रम ॥ नमृदा
 नधाने ॥ ॥ उरुव ॥ गीत ॥ खलुगममका ॥ श्रम ॥ वज्रकर्ममहाव
 जं वज्रवजाय नमस्तु वज्रयक्रुहवी विघ्नी सधिवजाय नमस्तु ॥ ५ ॥
 अरुयमृदानधाने ॥ व १ ॥ मूलकर्मनृत्य ॥ गीत ॥ वीरसक्रुव ॥ श्रमक
 ॥ वज्रनामधिपस्य कूलिरुगसखावकाया थक ४ लोकानाहिरकाम्य

विजयिनः विरहस्य नृपा विरहनाचनानास्व नृपद वदनः चारु फल
पीतिष्ठ पश्य कादिसेदासन स्कि ग महाविध्यापशकः सदा ॥ अपमा
सन म्मत्त ॥ त ॥ शक ॥ पर ॥ मुकुन्दस्य ॥ गीग ।

॥ १॥

॥ सत्वपय्ये कौसनः १३ ॥ अक्षक ॥ स ३ ॥

मूकनृत्य ॥ गीत ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

हृदासनेम्न १७ ॥ १४ ॥ १५ ॥

॥ मुकुन्दस्य ॥ गीत ॥

॥ श्री कृष्ण ॥

॥दीयासनं ४॥

श्रीकृष्ण

॥वी ५॥

॥ मृकन्दस्य ॥ गीत ॥

अज्ञाक ॥

॥ इन्द्रासने श्री १० ॥ अक्षय ॥

1158

॥ ॥ मुकुटस्य ॥ गीत ॥

॥५॥

ललितासनं १४ ॥ अक्षक ॥

गलन

मूक॥ नृस्यु॥ गीत॥

॥ श्री कृ ॥

॥ स्वस्ति ॥

कांसुन॥ ३॥ संकु॥

॥सुट॥

॥पूनश्चक॥अ

ग्रहपुनिरागिण्यादि॥

॥ धनद्वयनिश्चयेन ॥ गी ॥

वज्रमयहमि॥

॥ कीलनरावना ॥

॥ कर्मनृत्तगीत ॥

ॐ

पूर्वजमात्री ॥ ॥ अ॥ क॥ य० सुखार्थयनिर्यंप्रकृतिर्गोकिङ्कनाटोपद्रुका
वेनादसुस्यविधोपधाषाद्यटिगघनघसाधाषसानन्दमूर्तिः ॥ ससा
याकावकावागुहविद्वदवादान३० स्वपुनष्टादिक्ककोधवजीध
नकवकमलकोधवाजनसामि ॥ ॥ मूलनृत्तगीत ॥ पुमृदिगा

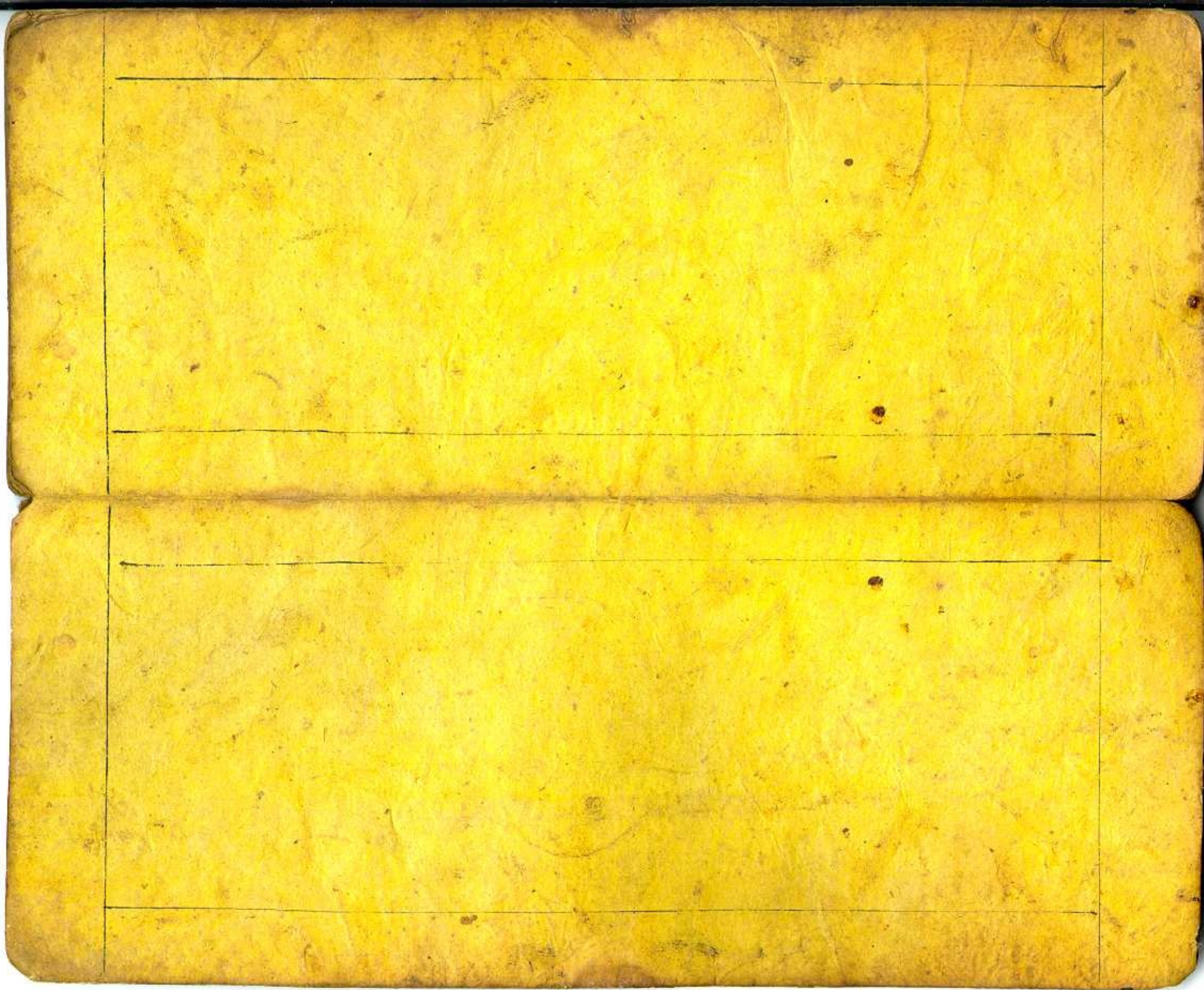
ॐ

॥ अ॥ क॥ नृत्तनाकमपद्यागिरसिकुचगुह्यमकसुधमार्गवजादि
यगुपाक्षि० परिगगमिखत्रभीषमालेन्द्रमाली। वाजाकागिष्ठक० ॥ अ॥ य

नमिवगविर्गनागचर्माहनीय० पायाह्नीसम्भवावलिखनविजयीजग
किनीवकवर्ति ॥ ॥ गीतगधर्मधुल ॥ वसुधाय ॥ ॥ मधु
सस्यारुपलेसुकलसुसुखवज्रचष्टनगल्लापन ॥ ॥ कलशपूजा
॥ गीत ॥ नीमार्गान्वृत्त ॥ ॥ प्र॥ स० ॥ द० वज्र॥ उ० र्ध० ॥ पोस० स्व० ॥ क
र्मधपूजा ॥ ॥ धेनवगमधिवसुन ॥ ॥ सुयवत्सन ॥ ॥ दवागा
धिवसुन ॥ ॥ वलिखवना ॥

रविवलमहावीरं मम यहा चैकमं दानपते मनसा पूर्णं विद्यु
मणासूगम्यतां ॥ ॥ पुनः ॥ वृद्धवलमहावीरं ददर्शयत्तं दलं
दिक्षः ॥ आयागा सर्वमावाधं कपवीर्यं त्वया कुरु ॥ ॥ वधुम
हावीरवधमहावीरं मम यहा चैकमं दानपते मनसा पूर्णं वि
द्युमणासूगम्यतां ॥ ॥ वधुवीरमहावीरं ददर्शयत्तं दलं
स्वसंपत्तिं संपन्ना आयाग्यं गुरुयतां ॥ कामभाकादि संप्राप
सिद्धिवन्तु विद्युवदहिमं ॥ पित्रुवधकवीरं त्वं रूपदर्शयत्तं कुरु ॥

रविवलमहावीरं मम यहा चैकमं दानपते मनसा
पूर्णं विद्युमणासूगम्यतां ॥ ॥ वरवीरासिनी महावीरं
ददर्शयत्तं दलं स्वसंपत्तिं संपन्ना आयाग्यं गुरुयतां ॥ कामभा
कादि संप्राप सिद्धिवन्तु विद्युवदहिमं ॥ पित्रुवधकवीरं त्वं रूपदर्शयत्तं कुरु ॥



कालु अर्धचंद्र २
 वज्रसंक्रान्त कवचलद २
 वज्रपाश २ वीन २
 वज्रसुता २ धूपक २
 वज्रविभक्त दीपयच्छी २
 मृगन २ मृग २
 चक्र २ चिकामसिध २
 स्वगी २ सुवधुमाला २
 मृगन २ १ वज्रासन १ पञ्चास १
 यगाय २ पर्यक्रान्तन २ रुद्र
 पाश २ वीनास १ उल्लोका १
 पम २ ललीतागन १ स्वस्ति १
 दधु २ २ आली १ पद १ पृथ १
 रुली २ वेभस ३ मधुले ४ स १
 धूप २ दग १ कूर्म ३ नक १ प १
 लीपा २ जगपद १ पृथ १ क १
 कमा २ वीकग १ ० पृथ १ क १
 खावगा २
 धक्की २
 पृथमाला २
 धक्की २
 कृगन २

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००